October 22, 2024
Tuesday

पाठ :

कवितावली (उत्तर कांड से)
लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप
(तुलसीदास)

जीवनपरिचय :

गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म बाँदा जिले के राजापुर गाँव में सन् 1532 में हुआ था कुछ लोग इनका जन्म स्थान सोरों मानते हैं इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी बाई और इनकी पत्नी का नाम रत्नावली और तुलसीदास जी के गुरु का नाम नरहरिदास था। तुलसीदास जी का जीवन बहुत ही वियोग में बीता और बाद में रत्नावली के कहने पर वे बैरागी बन कर रामभक्ती में लीन हो गए। इनके बचपन का नाम रामबोला था। सन् 1623 में इनकी मृत्यु हो गयी।

प्रमुख रचनाएँ :

रामचरित-मानस, कवितावली, रामलला नहछू, गीतावली, दोहावली, विनयपत्रिका, रामाज्ञा-प्रश्न पार्वती मंगल, जानकी मंगल, बैराग्य संदिपनी आदि।

काव्यगत विशेषताएँ :

गोस्वामी तुलसीदास रामभक्ति शाखा के सर्वोपरि कवि हैं। ये लोकमंगल की साधना के कवि के रूप में विख्यात हैं। यह तथ्य सिर्फ उनकी काव्य संवेदना की दृष्टि से नहीं बल्कि काव्यभाषा के घटकों की दृष्टि से भी सत्य है। तुलसीदास में जीवन व जगत की व्यापक अनुभूति और मार्मिक प्रसंगों की अचूक समझ है।

भाषाशैली :

गोस्वामी तुलसीदास अपने समय में हिंदी क्षेत्र में प्रचलित सारे भावात्मक तथा काव्य भाषायी तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके काव्य में भाव- विचार, काव्यरूप, छंद, तथा काव्यभाषा की अद्भुत बहुलता मिलती है।

साहित्य में स्थान :

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल को रामभक्ति शाखा में आपका नाम युगों-युगों तक स्मरणीय रहेगा।

प्रश्न : कवितावली में उद्धृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

उत्तर : कवितावली के लिए उद्धृत छंदों के अध्ययन से पता चलता है, कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है। उन्होंने समकालीन समाज का यथार्थ परक चित्रण किया है। वे समाज के विभिन्न वर्गों का वर्णन करते हैं, जो कई तरह के कार्य करके अपना निर्वाह करते हैं। तुलसीदास तो यहाँ तक बताते हैं कि पेट भरने के लिए लोग सही गलत सभी कार्य करते हैं। उनके समय में भयंकर गरीबी, बेरोजगारी थी। गरीबी के कारण लोग अपनी संतान तक को बेच देते थे। बेरोजगारी इतनी अधिक थी कि लोगों को भीख तक नहीं मिलती थी। दरिद्रता रूपी रावण ने हर तरफ हाहाकार मचा रखा था।

प्रश्न: पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है — तुलसी का यह काव्य-सत्य क्या इस समय का भी युग-सत्य है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

उत्तर: जब पेट में आग जलती है, तो उसे बुझाने के लिए व्यक्ति हर तरह का उल्टा अथवा बुरा कार्य करता है, किंतु यदि ईश्वर का नाम जपले तो इसकी अग्नि का शमन हो सकता है, क्योंकि ईश्वर की कृपा से वह सबकुछ प्राप्त कर सकता है। तुलसी का यह काव्य-सत्य आज भी उतना ही प्रसांगिक है, जितना की उस समय था। ईश्वर भक्ति का मेघ ही मनुष्य को अनुचित कार्य करने से रोकने की क्षमता रखता है।

प्रश्न: तुलसी ने यह कहने की जरूरत क्यों समझी?

धूत कहौ, अवधूत कहौ,
रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब,
काहूकी जाति बिगार न सोऊ।।

इस सवैया में काहू के बेटासों बेटी न ब्याहब कहते तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आता?

उत्तर: तुलसीदास के युग में जाति संबंधी नियम अत्यधिक कठोर हो गए थे, तुलसी के संबंध में भी समाज में उनके कुल व जाती पर प्रश्न चिह्न लगाए थे कवि भक्त था तथा उसे सांसारिक संबंधों में कोई रुचि नहीं थी वह कहता है, कि उसे उपने बेटे

का विवाह किसी की बेटी से नहीं करना। इससे किसी की जाति खराब नहीं होगी, क्योंकि लड़की वाला अपनी जाति में वर ढूँढता है। पुरुष प्रधान समाज में लड़की की जाति विवाह के बाद बदल जाती है।

तीसरे तुलसी बिना जाति के अपनी लड़की की शादी करते तो समाज में जातिप्रथा पर कठोर आघात होता। इससे सामाजिक संघर्ष भी बढ़ सकता था।

प्रश्न: धूत कहौ.... वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखलाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की है। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर: तुलसीदास का जीवन सदा अभाव में बीता लेकिन उन्होंने अपने स्वाभिमान को जगाए रखा। इसी प्रकार के भाव उनकी भक्ति में भी आए हैं। वे राम के सामने गिड़गिड़ाते नहीं बल्कि जो कुछ उनसे प्राप्त करना चाहते हैं वह भक्त के अधिकार की दृष्टि से प्राप्त करना चाहते हैं। उन्होंने अपनी स्वाभिमानी भक्ति का परिचय देते हुए राम से यही कहा है कि — मुझपर कृपा करो तो भक्त समझकर न कि कोई याचक या भिखारी समझकर।

प्रश्न: भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के

रूप में रचा है। क्या आप इससे सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर: जब लक्ष्मण को शक्ति बाण लगा तो राम एकदम बिह्वल हो उठे, वे ऐसे रोए जैसे कोई बालक पिता से बिछुड़कर रोता है। सारी मानवीय संवेदनाएँ उन्होंने प्रकट कर दीं जिस प्रकार मानव मानव के लिए रोता है, ठीक वैसे ही राम ने किया राम के ऐसे रूप को देखकर यही कहा जा सकता है, कि राम की दशा को प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। मानव में अवस्थित सारी अनुभूतियाँ इस शोक सभा में दिखाई देती हैं।

प्रश्न: शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है?

उत्तर: हनुमान लक्ष्मण के इलाज के लिए संजीवनी बूटी लाने हिमालय पर्वत गए थे। उन्हें आने में देर हो रही थी इधर राम बहुत व्याकुल हो रहे थे उनके विलाप से वानर सेना में शोक की लहर थी चारों तरफ शोक का माहौल था इसी बीच हनुमान संजीवनी बूटी लेकर आ गए सुषेण वैद ने तुरंत संजीवनी बूटी से दवा तैयार करके लक्ष्मण को पिलाई तथा लक्ष्मण ठीक हो गए। लक्ष्मण के उठने से राम का शोक समाप्त हो गया और सेना में उत्साह की लहर दौड़ गयी। इस तरह हनुमान द्वारा पर्वत उठाकर लाने से शोक ग्रस्त माहौल में वीर रस का आविर्भाव हो गया था।

प्रश्न : जैऊँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाई गँवाई॥
बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं॥

भाई के शोक में डूबे राम के इस प्रलाप - वचन में स्त्री के प्रति कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित है?

उत्तर : इस वचन में नारी के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण दिखाई देता है। राम ने अपनी पत्नी के खो जाने से बढ़कर लक्ष्मण के मूर्छित हो जाने को महत्व दिया है। उन्हें इस बात का पछतावा होता है, कि नारी के लिए मैंने भाई खो दिया, यह सबसे बड़ा कलंक है। यदि नारी खो जाए तो उससे कोई बड़ी हानि नहीं होती, नारी से बढ़कर तो भाई बंधु है, जिनके कारण व्यक्ति समाज में प्रतिष्ठा पाता है। यदि वही खो जाए तो माथे पर जीवन भर के लिए कलंक लग जाता है।

theboardstudy.com